Erin McLaughlin Khula - Semibold v. 1.001

### Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज़	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थैं	उज्ल	<b>उ</b> ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्ल	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेंशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ़	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ह्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	ૡ૽ૢૼ	क्र	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़म	सपल्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज़ैंय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

December 3, 2014 9:26 PM

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अठकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शल्क बढा, नहीं बढेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

# 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

## केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

#### जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

#### जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेंट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोक्स सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेंट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाडब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

### गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झुठ सच बोलकर उँगलियाँ

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing पपसपवपवसवव पपह्रपवपवह्रवव पपद्धपवपवद्भवव Rakar spacing पपहपवपवहवव पपळ्रपवपवळ्रवव पपद्भपवपवद्भवव पपकपवपवकवव पपक्रपवपवक्रवव पपक्रपवपवक्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपद्वपवपवद्ववव पपखपवपवखवव पपख्रपवपवख्रवव पपखपवपवखवव पपञ्चपवपवञ्चवव पपद्धपवपवद्धवव पपगपवपवगवव पपग्रपवपवग्रवव पपगपवपवगवव पपद्धापवपवद्धावव पपघपवपवघवव पपघ्रपवपवघ्रवव पपज़पवपवज़वव Conjunct spacing पपद्मपवपवद्मवव पपङपवपवङवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपड़पवपवड़वव पपद्यपवपवद्यवव पपचपवपवचवव पपच्चपवपवच्चवव पपक्तपवपवक्तवव पपढ्पवपवढ्वव पपद्दपवपवद्दवव पपछपवपवछवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपछ्रपवपवछ्रवव पपफ़पवपवफ़वव पपन्भपवपवन्भवव पपजपवपवजवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपज्रपवपवज्रवव पपयपवपवयवव पपन्मपवपवन्मवव पपझपवपवझवव पपड्यपवपवड्यवव पपझ्रपवपवझ्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपल्जपवपवल्जवव पपञपवपवञवव पपज्जपवपवज्जवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपज्ञपवपवज्ञवव पपल्थपवपवल्थवव पपटपवपवटवव पपट्रपवपवट्रवव पपज्थपवपवज्थवव पपल्भपवपवल्भवव पपठपवपवठवव पपज्यपवपवज्यवव **чч**ठ्रपवपवठ्रवव Vowel spacing पपल्मपवपवल्मवव पपडपवपवडवव पपड्रपवपवड्रवव पपज्सपवपवज्सवव पपल्यपवपवल्यवव पपढपवपवढवव पपअपवपवअवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपद्रपवपवद्भवव पपश्रपवपवश्रवव पपअपवपवअवव पपणपवपवणवव पपण्रपवपवण्रवव पपट्यपवपवट्यवव पपश्वपवपवश्ववव पपॲपवपवॲवव पपतपवपवतवव **чч**ячачаяаа पपठ्यपवपवठ्यवव पपश्लपवपवश्लवव पपथपवपवथवव पपइपवपवइवव पपड्यपवपवड्यवव पपथ्रपवपवथ्रवव पपष्टपवपवष्टवव पपईपवपवईवव पपदपवपवदवव पपद्रपवपवद्रवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपष्ट्रपवपवष्ट्रवव पपधपवपवधवव पपउपवपवउवव पपध्रपवपवध्रवव पपट्टपवपवट्टवव पपष्ठपवपवष्ठवव पपनपवपवनवव पपऊपवपवऊवव पपट्रपवपवट्रवव पपन्नपवपवन्नवव पपष्ठपवपवष्ठवव पपएपवपवएवव पपपपवपवपवव पपठ्ठपवपवठ्ठवव **чч**учачауаа पपह्नपवपवह्नवव पपऐपवपवऐवव पपफपवपवफवव पपडूपवपवडूवव पपफ्रपवपवफ्रवव पपह्नपवपवह्नवव पपऍपवपवऍवव पपबपवपवबवव पपडूपवपवडूवव पपब्रपवपवब्रवव पपह्मपवपवह्मवव पपऎपवपवऎवव पपभपवपवभवव पपढूपवपवढूवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपह्यपवपवह्यवव पपमपवपवमवव पपआपवपवआवव पपम्रपवपवम्रवव पपत्तपवपवत्तवव पपह्लपवपवह्नवव पपओपवपवओवव पपयपवपवयवव पपत्खपवपवत्खवव पपग्रपवपवग्रवव पपह्वपवपवह्नवव पपऔपवपवऔवव पपरपवपवरवव पपरूपवपवरूवव पपत्थपवपवत्थवव पपलपवपवलवव पपऋपवपवऋवव पपत्नपवपवत्नवव पपल्लपवपवल्लवव पपळपवपवळवव पपऋपवपवऋवव पपव्रपवपवव्रवव पपत्सपवपवत्सवव पपवपवपवववव पपलपवपवलवव पपत्यपवपवत्यवव पपश्रपवपवश्रवव पपशपवपवशवव पपलृपवपवलृवव पपद्धपवपवद्धवव पपष्रपवपवष्रवव पपषपवपवषवव पपस्रपवपवस्रवव पपद्गपवपवद्गवव

U/Uu variant spacing	पपपॉपपरॉपपकॉपप	Numeral spacing	पपन, पवन. ——	पपए, पवए.	पपद्ग, पवद्ग.
पपहुपवपवहुवव	पपपाँपपराँपपकाँपप	००००१०१०११	पपप, पवप.	पपऐ, पवऐ.	पपद्घ, पवद्घ.
पपहूपवपवहूवव	पपपौपपरौपपकौपप	००१०१०११११	पपफ, पवफ.	पपऍ, पवऍ.	पपद्भ, पवद्भ.
पपहृपवपवहृवव	पपपोंपपरोंपपकोंपप	००२०१०१२११	पपब, पवब.	पपऎ, पवऎ.	पपद्व, पवद्व.
	पपर्पीपपर्रीपपर्कीपप	0030808388	पपभ, पवभ.	पपआ, पवआ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहृपवपवहृवव	पपपोपपरोपपकोपप		पपम, पवम.	पपओ, पवओ.	पपद्द, पवद्द.
पपहुपवपवहुवव	पपपोंपपरोंपपकोंपप	0080808888	पपय, पवय.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपहूपवपवहूवव	पपर्पोंपपर्रोंपपर्कोंपप	००५०१०१५११	पपर, पवर.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ट्र, पवष्ट्र.
पपरुपवपवरुवव	पपपौपपरौपपकौपप	००६०१०१६११	पपल, पवल.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपरूपवपवरूवव	पपपौंपपरौंपपकौंपप	००७०१०१७११	पपळ, पवळ.	पपल, पवल.	पपष्ठ, पवष्ठ्र.
पपदुपवपवदुवव	पपपौंपपरौंपपकौंपप	००८०१०१८११	पपव, पवव.	पपॡं, पवॡं.	पपह्लं, पवह्लं.
पपदूपवपवदूवव		००९०१०१९११	पपश, पवश.	e, E.	पपह्न, पवह्न.
पपदृपवपवदृवव	पपपुपपरुपपकुपप		पपष, पवष.		पपह्ल, पवह्ल.
	पपपूपपरूपपकूपप	Letter-punct spacing	पपस, पवस.	पपङ्ग, पवङ्ग.	पपह्न, पवह्न.
Vowel sign spacing	पपपृपपरृपपकृपप	पपक, पवक.	पपह, पवह.	पपछ्र, पवछ्र.	(4)
पपपंपपरंपपकंपप	पपपृपपरॄपपकृपप	पपख, पवख.	पपक़, पवक़.	पपट्र, पवट्र.	पपहु, पवहु.
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपूपपरूपपक्रपप	पपग, पवग.	पपख़, पवख़.	पपठ्र, पवठ्र.	पपहू, पवहू.
पपपॅपपरॅंपपकॅपप		पपघ, पवघ.	पपग़, पवग़.	पपड्र, पवड्र.	पपह, पवह.
पपपँपपरँपपकँपप	पपपूपपरूपपकूपप		पपज़, पवज़.	पपढू, पवढू.	
पपपॆपपरॆपपकॆपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप	पपङ, पवङ.		पपद्र, पवद्र.	पपह्, पवह्र.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप	पपच, पवच.	पपड़, पवड़.	पपर्, पवर्.	पपहु, पवहु.
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप		पपछ, पवछ.	पपढ़, पवढ़.	पपह्न, पवह्न.	पपहू, पवहू.
पपपेपपरेपपकेपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपज, पवज.	पपफ़, पवफ़.	पपळू, पवळू.	पपरु, पवरु.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपझ, पवझ.	पपय़, पवय़.	~ ^	पपरू, पवरू.
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपञ, पवञ.	पपक्ष, पवक्ष.	पपक्त, पवक्त.	पपदु, पवदु.
	पपपॅंपपरॅंपपर्कंपप	पपट, पवट.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदू, पवदू.
पपपेपपरेपपकेपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपठ, पवठ.		पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदृ, पवदृ.
पपपैंपपरैंपपकेंपप	पपपेँपपरेँपपकेँपप	पपड, पवड.	पपअ, पवअ.		
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपर्पेंपपर्रेंपपर्केंपप	पपढ, पवढ.	पपऄ, पवऄ.	पपट्ट, पवट्ट.	-
	पपपेँपपरेँपपकेँपप	पपण, पवण.	पपॲ, पवॲ.	पपट्ठ, पवट्ठ.	पपक; पवक:
पपपापपरापपकापप		पपत, पवत.	पपइ, पवइ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपख; पवख:
पपपिपपरिपपकिपप	पपपऽपवपववऽवव	पपथ, पवथ.	पपई, पवई.	पपड्ढ, पवड्ढ.	पपग; पवग:
पपपीपपरीपपकीपप	पप?पवपव?वव	पपद, पवद.	पपउ, पवउ.	पपडु, पवडु.	पपघ; पवघ:
पपपींपपरींपपकींपप	पपपःपवपववःवव	पपर्ध, पवर्ध.	पपऊ, पवऊ.	पपढ्ढ, पवढ्ढ.	पपङ; पवङ:
पपपीँपपरीँपपकीँपप		•	-	पपद्ध, पवद्ध.	-

पपच; पवच:	पपड़; पवड़:	पपरू; पवरू:	पपहु; पवहु:	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपद्। पवद्दः
पपछ; पवछ:	पपढ़; पवढ़:	पपह्र; पवह्र:	पपहू; पवहू:	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपज; पवज:	पपफ़; पवफ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपरु; पवरु:	पपर। पवरः	पपऋ। पवऋः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझ:	पपय़; पवय़:		पपरू; पवरू:	पपल। पवलः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञ; पवञ:	पपक्ष; पवक्ष:	पपक्त; पवक्त:	पपदु; पवदु:	पपळ। पवळः	पपल्। पवलः	पपष्ठ्र। पवष्ठ्रः
पपट; पवट:	पपज्ञ; पवज्ञ:	पपङ्ग; पवङ्ग:	पपदू; पवदू:	पपव। पववः	पपॡ। पवॡः	पपह्न। पवह्नः
पपठ; पवठ:		पपङ्ग; पवङ्ग:	पपदृ; पवदृ:	पपश। पवशः		पपह्न। पवह्नः
पपड; पवड:	पपअ; पवअ:	पपट्ट; पवट्ट:		पपष। पवषः	गगर। गरर	पपह्न। पवह्नः
पपढ; पवढ:	पपऄ; पवऄ:	पपट्ठ; पवट्ठ:	-	पपस। पवसः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपह्न। पवह्नः
पपण; पवण:	पपॲ; पवॲ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपछ्। पवछः	
पपत; पवत:	पपइ; पवइ:	पपड्ढ; पवड्ढ:	पपख। पवखः	पपक्र। पवक्रः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपथ; पवथ:	पपई; पवई:	पपड्डु; पवड्डु:	पपग। पवगः	पपख़। पवख़ः	पपठ्र। पवठ्रः	पपहूँ। पवहूँ:
पपद; पवद:	पपउ; पवउ:	पपढ्ढ; पवढ्ढ:	पपघ। पवघः	पपग़। पवग़ः	पपड्र। पवड्रः	पपह्न। पवहः
पपध; पवध:	पपऊ; पवऊ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपङ। पवङः	पपज़। पवज़ः	पपद्र। पवद्रः	पपह्। पवहः
पपन; पवन:	पपए; पवए:	पपद्ग; पवद्ग:	पपच। पवचः	पपड़। पवड़ः	पपद्र। पवद्रः	पपह्नु। पवहुः
पपप; पवप:	पपऐ; पवऐ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपछ। पवछः	पपढ़। पवढ़ः	पपर्। पवरः	पपहूँ। पवहूँः
पपफ; पवफ:	पपऍ; पवऍ:	पपद्भः, पवद्भः	पपज। पवजः	पपफ़। पवफ़ः	पपह्न। पवहः	पपरु। पवरुः
पपब; पवब:	पपऎ; पवऎ:	पपद्व; पवद्व:	पपझ। पवझः	पपय्र। पवयः	पपळ्र। पवळ्ः	पपरू। पवरूः
पपभ; पवभ:	पपआ; पवआ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः	mæl næ.	पपदु। पवदुः
पपम; पवम:	पपओ; पवओ:	पपद्द; पवद्द:	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपक्त। पवक्तः	पपदू। पवदूः
पपय; पवय:	पपऔ; पवऔ:	पपष्ट; पवष्ट:	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवर:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ट्र; पवष्ट्र:	पपड। पवडः	पपअ। पवअः	पपङ्ग। पवङ्गः	
पपल; पवल:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपढ। पवढः	पपञ्जे। पवञैः	पपट्ट। पवटः	-
पपळ; पवळ:	पपल; पवल:	पपष्ठु; पवष्ठु:	पपण। पवणः	पपॲ। पवॲः	पपट्ठ। पवटुः	पपक! पवक?
पपव; पवव:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपठ्ठ। पवठः	पपख! पवख?
पपश; पवश:		पपह्न; पवह्न:	पपथ। पवथः	पपई। पवईः	पपड्ढ। पवड्ढः	पपग! पवग?
पपष; पवष:	गगरः गररः	पपह्न; पवह्न:	पपद। पवदः	पपउ। पवउः	पपड्ड। पवड्डः	पपघ! पवघ?
पपस; पवस:	पपङ्गः पवङ्गः	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपढ्ढ। पवढुः गणन्। गननः	पपङ! पवङ?
पपह; पवह:	पपछ्र; पवछ्र:		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ध। पवद्धः	पपच! पवच?
पपक़; पवक़:	पपट्र; पवट्र:	पपहु; पवहु:	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्ग। पवद्गः	पपछ! पवछ?
पपख़; पवख़:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपफ। पवफः	पपऍ। पवऍः	पपद्व। पवद्धः	पपज! पवज?
पपग़; पवग़:	पपड्र; पवड्र:	पपहः; पवहः	पपब। पवबः	पपऎ। पवऎः	पपद्भ। पवद्भः	पपझ! पवझ?
पपज़; पवज़:	पपद्र; पवद्र: पपद्र; पवद्र:	पपह्; पवहृ:	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्व। पवद्वः पपद्ध। पवद्धः	पपञ! पवञ?
	<b>ግግአ, ግ</b> ሣአ.				नम्सा मम्सः	

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपॡ-ॡपव	पपह्ल-ह्लपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपह्न-ह्नपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपटृ! पवटृ?		पपष-षपव	गार-सार	पपह्न-ह्नपव
पपढ! पवढ?	पपऄ! पवऄ?	पपट्ठ! पवट्ठ?	-	पपस-सपव	पपङ्र-ङ्रपव	पपह्न-ह्नपव
पपण! पवण?	पपॲ! पवॲ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपक-कपव	पपह-हपव	पपछ्र-छ्रपव	
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपड्टु! पवड्ट?	पपख-खपव	पपक़-क़पव	чч <u>ट</u> -ट्रपव	पपहु-हुपव
पपथ! पवथ?	पपई! पवई?	पपड्डु! पवड्डु?	पपग-गपव	पपख़-ख़पव	ччд-дча	पपहूँ-हूँपव
पपद! पवद?	पपउ! पवउ?	पपढ्ढ! पवढ्ढ?	पपघ-घपव	पपग़-ग़पव	पपड्र-ड्रपव	पपह-हंपव
पपध! पवध?	पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपङ-ङपव	पपज़-ज़पव	पपद्र-द्रपव	पपहॄ-हॄपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपद्ग! पवद्ग?	पपच-चपव	पपड़-ड़पव	पपद्र-द्रपव	पपहु-हुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपढ़-ढ़पव	पपर्-रूपव	पपहूं-हूंपव
पपफ! पवफ?	पपऍ! पवऍ?	पपद्भ! पवद्भ?	पपज-जपव	पपफ़-फ़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरु-रुपव
पपब! पवब?	पपऎ! पवऎ?	पपद्व! पवद्व?	पपझ-झपव	पपय़-य़पव	पपळ्-ळ्रपव	पपरू-रूपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-ञपव	पपक्ष-क्षपव	ागा <del>ट</del> स्वात	पपदु-दुपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपद्! पवद्द?	पपट-टपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपदृ-दृपव
पपर! पवर?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ट्र! पवष्ट्र?	पपड-डपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	
पपल! पवल?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपढ-ढपव	पपऄ-ऄपव	पपट्ट-ट्टपव	-
पपळ! पवळ?	पपल्! पवल्?	पपष्ट्र! पवष्ट्र?	पपण-णपव	पपॲ-ॲपव	पपट्ठ-द्रपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपत-तपव	पपइ-इपव	पपठु-ठुपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपह्न! पवह्न?	पपथ-थपव	पपई-ईपव	पपड्ढ-ड्डपव गण्ड-ड्यान	"गपवपग"
पपष! पवष?	गाग्द्र। गुनुद्रः	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपड्ड-डुपव गण्ड-डुण्ड	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपढू-ढूपव गण्ड-ट्यान	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपछ्र! पवछ्र? पपट्र! पवट्र?		पपन-नपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"
पपक़! पवक़?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहु! पवहु?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ग-द्गपव गण्ड-द्राप्त	"छपवपछ"
पपख़! पवख़?	पपड्र! पवड्र?	पपहू! पवहू?	पपफ-फपव	पपऍ-ऍवव	पपद्ध-द्वपव	"जपवपज"
पपग़! पवग़?		पपहृ! पवहृ?	पपब-बपव	पपऎ-ऎपव	पपद्भ-द्भपव गण्य-स्थान	"झपवपझ"
पपज़! पवज़?	पपद्र! पवद्र? पपद्र! पवद्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपद्व-द्वपव	"ञपवपञ"
पपड़! पवड़?		पपह्रु! पवह्रु?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपद्ध-द्धपव गणद-दणव	"टपवपट"
पपढ़! पवढ़?	पपर्! पवर्? पपट! पतट?	पपह्रू! पवह्र?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपद्-द्दपव पपष्ट-ष्टपव	"ठपवपठ"
पपफ़! पवफ़?	पपह्न! पवह्न?	पपरु! पवरु?	पपर-रपव	पपऋ-ऋपव		"डपवपड"
पपय़! पवय़?	पपळ्! पवळ्?	पपरू! पवरू?	पपल-लपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट्-ष्ट्रपव पपष्ठ-ष्ठपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?	पपक्त! पवक्त?	पपदु! पवदु?	पपळ-ळपव	पपल-लपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"णपवपण"
					2 2	

"तपवपत" "थपवपथ" "दपवपद" "धपवपध" "नपवपन" "पपवपप" "फपवपफ" "भपवपभ" "मपवपम" "यपवपय" "रपवपर" "लपवपल" "लपवपल" "अपवपअ" "सपवपस" "हपवपह" "कपवपह" "कपवपह" "अपवपअ" "उपवपः" "अपवपः"	"इपवपइ" "ईपवपई" "उपवपउ" "ऊपवपऊ" "एपवपए" "ऐपवपए" "ऍपवपऍवव "ऎपवपऍ" "ओपवपओ" "ओपवपओ" "ऋपवपऋ" "ॡपवपॡ" "ॡपवपॡ" "हपवपह्" "हपवपट्ट" "हपवपट्ट" "इपवपट्ट" "इपवपट्ट" "इपवपट्ट" "इपवपट्ट" "इपवपट्ट" "हपवपट्ट"	"हुपवपहु" "हुपवपहु" "हुपवपढु" "द्धपवपद्ध" "द्धपवपद्ध" "द्धपवपद्ध" "द्धपवपद्ध" "ह्यपवपष्ठ" "ह्यपवपष्ठ" "ह्रपवपष्ठ" "ह्रपवपह्र" "ह्सपवपह्र" "ह्सपवपह्र" "ह्सपवपह्र" "ह्सपवपह्र" "ह्सपवपद्ध" "द्सपवपद्द" "द्रपवपद्द" "द्रपवपद्द"	Num-punct spacing  Vay ₹00 aya  Vay ₹208 aya  Vay ₹308 aya  Vay ₹408 aya  Vay ₹408 aya  Vay ₹608 ay	पपिकपपिकंपपिकंपप पपिकपपिकंपपिकंपपि पपियपियांपपियिप पपियपियांपपियिप पपिकपपिकंपपिकंपपिय पपिकपपिकंपपिकंपपिया पपिकपपिकंपपिकंपपिया पपिकपपिकंपपिकंपपिया पपिकपपिकंपपिकंपपिया पपिकपपिकंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपितंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिकंपपिया पपिकपितंपियांपिकंपपिया पपिकपिकंपपिकंपपिकंपपिया	पपळिपपळिंपपर्विपप पपविपपविंपपर्विपप पपिषपपिंपपर्षिपप पपसिपपसिंपपर्सिपप पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्शिपप पपिक्षिपपिक्षिंपप पपिक्षिपपिक्षिंपप
---	---	---	---	--	---

Ii Vowel sign	पपर्क्सिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्णिपप	पपर्च्टिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्सिपप
clusters	पपर्क्हिपप	पपर्ख्त्यपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्रिपप	पपर्ठ्रिपप	पपर्त्मिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्ळिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्हिपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ठठ्यपप	पपर्त्यिपप
पपर्क्खिपप	पपक्किर्यपप	पपर्ग्गिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्हिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ड्विपप	पपर्त्रिपप
पपर्क्गिपप	पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्किपप	पपर्ड्विपप	पपर्लिपप
पपर्क्चिपप	पपर्क्त्यपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्विपप
पपर्क्छिपप	पपर्क्त्विपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्ल्सिपप
पपर्क्जिपप	पपर्क्विपप	पपर्ग्दिपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्पिप	पपर्ढ्विपप	पपर्क्यिपप
पपर्क्झिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ढीपप	पपर्क्रिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्निपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्निपप	पपर्झ्निपप	पपर्ढ्रिपप	पपर्त्सिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्बिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्त्खिपप
पपर्क्डिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्भिपप	पपघ्ल्यपप	पपर्च्रिपप	पपर्झिपप	पपर्व्ढ्यिपप	पपर्ल्जिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्मिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्लिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्ल्जिपप
पपर्क्णिपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्र्ीपप	पपर्च्विपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्टीपप	पपर्ल्यिपप
पपर्क्तिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्खिंपप	पपर्च्सिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्प्रिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्खिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्खींपप	पपर्च्मिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्त्प्लिपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्टिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्म्यिपप
पपर्क्निपप	पपर्ख्ळिपप	पपर्ग्सिपप	पपर्झीपप	पपर्च्चिपप	पपर्व्शिपप	पपर्णिपप	पपर्त्स्निपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्णिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्तिपप	पपर्त्स्यिपप
पपर्क्फिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्ध्विपप	पपङ्घींपप	पपर्छ्रिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्ण्यिपप	पपि्रस्विपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्दिपप	पपग्र्निपप	पपर्ङ्चिपप	पपछ्विपप	पपर्ट्टिपप	पपर्ण्रिपप	पपत्स्न्र्यपप
पपर्क्सिपप	पपर्ख्निपप	पपग्भ्यिपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्टीपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्किपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ग्र्यिपप	पपङ्रर्क्रीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्हिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्मिपप	पपग्म्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्झिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्मिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपग्र्यिपप	पपर्झिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्स्थिपप	पपर्श्रिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्जिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्लिपप	पपर्थ्लिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्निपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्पिपप	पपर्थ्विपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्बिपप	पपट्र्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्थ्सिपप
	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्द्गिपप

पपर्द्धिपप	पपर्न्तिपप	पपन्ध्यिपप	पपर्फ्टिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्जिपप
पपर्द्दिपप	पपर्न्थिपप	पपर्म्श्रिपप	पपर्फ्तिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्टिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्दिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्प्दिपप	पपर्म्ब्यिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्ठिपप
पपर्द्विपप	पपर्न्धिपप	पपन्स्म्यपप	पपर्म्निपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्रिपप	पपर्स्डिपप
पपर्द्भिपप	पपर्न्निपप	पपर्प्किपप	पपर्फ्पिपप	पपर्म्थिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्हिपप
पपर्द्मिपप	पपर्न्पिपप	पपर्झिपप	पपर्म्मिपप	पपर्म्श्रिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्तिपप
पपर्खिपप	पपर्म्भिपप	पपर्प्टिपप	पपर्फ्यिपप	पपम्भिर्वपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्थिपप
पपर्द्रिपप	पपर्न्बिपप	पपर्प्विपप	पपर्फ्रिपप	पपर्य्यिपप	पपिल्र्यिपप	पपर्स्दिपप
पपर्द्विपप	पपर्भिपप	पपर्प्टीपप	पपर्फ्लिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्निपप
पपर्द्ध्यिपप	पपर्मिपप	पपर्खिपप	पपर्फ्शिपप	पपर्लिपप	पपल्र्क्यिपप	पपर्स्पिपप
पपर्द्व्रिपप	पपर्न्यिपप	पपर्प्हिपप	पपर्भ्निपप	पपर्व्यिपप	पपर्स्थिपप	पपर्स्फिपप
पपर्द्ऱ्यिपप	पपर्न्निपप	पपर्णिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्ल्द्रिपप	पपर्स्बिपप
पपर्ध्किपप	पपर्न्लिपप	पपर्प्तिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्मिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्विपप	पपर्ष्यिपप	पपर्भ्लिपप	पपर्सिपप	पपर्श्खिपप	पपर्स्यिपप
पपर्ध्निपप	पपर्न्सिपप	पपर्प्दिपप	पपर्भ्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्रिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्हिपप	पपर्ष्यिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्किपप	पपश्छिपप	पपर्स्लिपप
पपर्ध्रिपप	पपन्भिर्यपप	पपर्प्निपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्विपप
पपर्ध्लिपप	पपन्भिर्वपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्गिपप	पपर्श्तिपप	पपर्स्सिपप
पपर्ध्विपप	पपन्म्यिपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्निपप	पपस्म्यिपप
पपर्ध्सिपप	पपन्स्टिपप	पपर्मिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्क्रिपप
पपर्न्किपप	पपन्स्यिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्श्मिपप	पपस्त्र्यपप
पपर्न्खिपप	पपर्ह्यिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्यिपप	पपस्थ्यिपप
पपर्न्चिपप	पपन्ज्यिपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्श्रिपप	पपस्म्यिपप
पपर्म्छिपप	पपन्क्सिपप	पपर्ष्विपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्श्लिपप	पपस्त्विपप
पपर्न्जिपप	पपन्त्र्यपप	पपर्ष्पिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्तिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप
पपर्म्झिपप	पपन्त्सिपप	पपर्सिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्शिपप	पपस्न्यिपप
पपर्न्टिपप	पपर्स्थिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्दिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्लिपप
पपर्न्ठिपप	पपन्थ्विपप	पपर्प्त्यिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्तिपप
पपर्न्डिपप	पपर्न्द्रिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्न्धिपप	पपर्प्जिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप

पपर्हम्यिपप

पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप

पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप पपर्ह्मिपप

पपळ्यिपप पपळ्पिपप पपळ्विपप पपर्स्यिपप पपर्स्मिपप पपर्स्विपप पपर्स्विपप

#### Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्ढपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्खपपक्यप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्ढपपक्फपपक्यपप

पपक्कपपख्वपपखापपख्यपपख्डपपख्वप पख्ठपपख्जपपख्झपपख्जपपख्टपपख्ठपपख्डप पद्धपपख्णपपख्तपपख्थपपख्दपपख्अपपख्जप पद्भपपख्यपपख्कपपख्कपपख्मपपख्यप पख्रपपख्नपपख्लपपख्कपपख्कपपख्लप पख्अपपख्सपपख्हपपक्कपपख्वपपखापपद्भप पख्डपपख्कपपख्कपपख्यपप

पपग्कपपग्खपपग्गपपग्घपपग्डपपग्चप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्कपपग्खपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्रपपग्लपपग्कपपग्ळपपग्वपपग्शपपग्षप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्फपपग्यपप

पपघ्कपपघ्खपपघापपघ्यपपछ्पपघ्यप पघ्छपपघ्जपपघ्सपपघ्नपपघ्टपपघ्ठपपघ्टप पघ्तपपघ्मपपघ्मपपघ्यपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्मपपघ्लपपघ्लपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्सपपघ्लपपघ्लपपघ्मपपघ्मप पघ्नपपघ्मपपघ्सपपघ्लपपघ्लपपाय पद्मपपघ्नपपद्लपपाय पपक्कपपच्खपपच्यपपच्यपपच्यप पच्छपपच्जपपच्झपपच्जपपच्टपपच्ठपपच्डप पच्ढपपच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नप पच्नपपच्मपपच्कपपच्बपपन्अपपच्मपपच्यप पच्चपपच्सपपच्लपपच्ळपपच्छपपच्यपपच्शप पच्थपपच्सपपच्हपपक्कपपच्खपपचापपज्जप पच्डपपच्ढपपच्कपपच्यपप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्रपपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछषपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्चपपञ्डपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्गपपञ्कपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्पपपञ्कपपञ्चपपञ्भपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्कपपञ्चपपञ्चपपञ्शप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्जप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्जप पञ्डपपञ्कपपञ्कपपञ्चपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइम्भपपइबपपइभपपइमपपइयप पद्मपपइसपपइलपपइळपपइञपपइशप पद्मपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप पइडपपइढपपइफ़पपइयप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्छपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्णपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्पपञ्कपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्घपपट्नप पट्तपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्पपट्कपपट्ळपपट्मपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्फपपट्यपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्डपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्नपपठ्सपपठ्लपपठ्ळपपठ्कपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्दपपठ्फपपठ्

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्नपपड्सपपड्लपपड्ळपपड्लपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पद्रपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ळपपढ्वपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ़षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्ठपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठप पण्नपपण्पपण्कपपण्खपपण्अपपण्मपण्यप पण्नपपण्सपपण्लपपण्ळपपण्ळपपण्चपपण्शप पण्पपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्छपपत्गप पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्कप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपप

पपद्कपपद्खपपद्गपद्झपपद्झपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्डपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्कपपद्भपद्मप पद्नपपद्नपपद्पपद्कपपद्ळपपद्य पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्झपपद्हपपद्कपपद्यप पद्गपपद्जपपद्डपपद्कपपद्यपप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्यपपध्यप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्टप पध्टपपध्गपपध्तपपध्यपपध्दपपध्यपप्नप पध्नपपध्मपपध्मपपध्वपपध्मपप्मपध्यप पध्नपपध्मपपद्मपपद्खपपध्जपपध्मप पष्मपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपध्गप पध्टपपध्टपपध्मपप्स्मपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्यप पन्कपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपनापपन्जपपन्डपपन्दपपन्कपपन्सपपन्यपप

पपत्कपपत्खपपत्नापपत्यपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्दप पत्णपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्य पपत्कपपत्वपपत्भपपत्मपपत्यपप्रप्रपपत्तप पत्ळपपत्ळपपत्वपपत्शपपत्भपपत्सपपत्हपपत्कप पत्खपपत्नापपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपपत्यपप पपप्कपपप्खपपपापपष्यपपप्कपपप्चपपप्कप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्कपप पप्तपपष्थपपप्दपपष्धपपप्नपप्नपप्पपपप्कप पप्जपपप्वपपप्शपपप्यपपप्रपप्रपप्कपपप्कप पप्जपप्जपप्झपपप्कपपप्कपपप्यपप् पपापप्जपप्डपप्डपप्कपप्यपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्थपपम्झपपम्चप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्झप पम्दपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नप पम्नपपम्पपपम्कपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यप प्रमपपम्रपपम्लपपम्ळपपम्ळपपम्वपपम्शप पम्भपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपप्जप पम्डपपम्द्वपपम्भपपस्यपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्डपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्छपपम्नपपम्नपपम्नप पम्भपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्रपपम्लप पम्कपपम्खपपम्गपपम्शपपम्बपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्हपपम्भप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्हपप

पपय्कपपय्खपपय्गपपय्घपपय्डपपय्चपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्मप पय्जपपय्बपपय्भपपय्मपपय्यपप्रपपय्नपप्यप पय्कपपय्खपपय्भपप्यभपय्यपप्रपपय्नप पय्कपपय्खपपयापप्यपपय्मपप्यसपप्यहप पय्कपपय्खपपयापप्यजपप्यसपप्यहप प्रयाप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्छपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्क्रपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्वप पर्फपपर्यपप

पपःकपपःखपपःगपपञ्चपपःखपपःचपपःछप पःजपपःझपपःञपपःदपपःठपपःइपपःदपपःगप पःतपपश्यपपःदपपश्चपपःनपपःनपपःमप पःखपपश्मपपःयपपःरूपपःशपपःलपपःखप पःळपपःवपपश्चपपःसपपःहपपःकपपःखप पःगपपःजपपःइपपःदुपपःकपपःयप पपल्कपपल्खपपलापपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्घपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्सपपल्लपपल्ळपपल्खपपल्गपपल्अप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्डपपल्फपपल्यपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळऩपपळपपपळफपपळबप पळभपपळमपपळयपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळगापपळजपपळड़प पळकपपळखपपळग्रपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळमपपळयपपळूपपळऱपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रापपळजपपळडप पळढपपळफपपळयप

पपक्कपपव्खपपनापपद्यपपद्धपपव्यपपद्धप पञ्जपपद्भपपञ्जपपद्धपपञ्जपपद्धपपञ्जप पञ्जपपद्धपपञ्चपपञ्जपपञ्जप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्जपपञ्जप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपद्धपपद्धपपद्भपपञ्जप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपद्धपपञ्जपपञ्जपप पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्चपपश्चपपश्चप पश्पपपश्कपपश्चपपश्मपपश्यपपश्चप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्चपपश्चपपश्चप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्चप पश्चपपश्कपपश्चपप

पपष्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डपपष्ठप पष्जपपष्झपपष्जपपष्टपपष्ठपपष्डपपष्ठप पष्जपपष्भपपष्पपपष्यपपष्रपपष्नपपष्नपपष्कप पष्जपपष्वपपष्शपपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्जपपष्वपपष्शपपष्वपपष्ट्रपपष्कप पष्खपपषापपापष्जपपष्डपपष्कपपष्मप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्ढपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्धपपस्नप पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्मपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्ढपपस्कपपस्खपप

पपस्कपपस्खपपस्मपपस्थपपस्डपपस्चपपस्छप परजपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्डप पह्मपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपह्मपपस्मप पस्मपपस्बपपस्भपपद्मपपह्मपपह्मपपस्यप पस्कपपस्ळपपह्मपपस्शपपस्मपपस्सपपस्हप पस्कपपस्खपपस्मपपस्जपपस्डपपस्खप पस्कपपस्खपपस्मापपस्जपपस्डपपस्खप

#### less common half-forms

पपक्ष्कपपक्ष्यपद्भगपपक्ष्यपपक्ष्यपक्ष्यपक्ष्यपद्भगपक्ष्यप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्डपपङ्चप पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्छप पङ्ढपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नपपङ्पप पङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपप पपङ्यपपङ्लपपङ्ळप पङ्पपवपपङ्शपप पपङ्षपपङ्सपप

पपरक्रपपरखपपरग्रापपरग्रपपरह्मपपर्छप परजपपरझपपरञ्जपपरटपपरठपपरहपपरद्धप परग्रपपरतपपरथपपरद्भपपरग्रप परक्रपपरबपपरभपपरमपप पपर्यपपरलप परळपपरग्रपवपपरशपप पपरश्रपपरसपपरहपप

पपश्कपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्णपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्कपपश्चपपश्चपपश्चपप पपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपप पपश्चपपश्चपप पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रदपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पपःक्रपपःख्रपपःग्रापपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःज्ञपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःग्रापपःत्रपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःग्रापपःश्चपपःश्मपपःग्मपप पपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःग्रापवपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप

पपप्रकपपप्रखपपप्रापपप्रयपप्रखपपप्रखपपप्रखप पप्रजपपप्रझपपप्रजपपप्रटपपप्रखपपप्रखप पप्रणपप्रजपपप्रथपपप्रदपपप्रधपपप्रजपपप्रपप पप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रजपपप्रखप पप्रमपवपप्रशापप पपप्रथपप्रसपपप्रसपप

पपज्रमपपज्रखपपज्रापपज्ञापपज्ञ

पपइक्रपपइख्रपपइग्रापपइघ्यपपइह्रपपइच्यप पइछ्रपपइज्जपपइह्मपपइञ्जपपइटपपइठ्यपइह्यप पइद्धपपइग्गपपइतपपइश्रपपइद्यपपइध्यपइनप पइमपपइम्मपपइब्रपपइश्मपपइमपप पपइयप पइल्लपपइळ्यपइमपवपपइश्रापपइश्मपपइसप पद्ध्यप

पपञ्कपपञ्खपपञ्जापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्जापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपवपपञ्जापप पपञ्जपपञ्चप पञ्जपप

पपण्कपपण्खपपणापपण्ठपपण्डपपण्ठप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नपपण्पप पण्कपपण्डपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्लप पण्ळपपण्यपवपण्शपप पपण्यपपण्लप

पप्रक्रपप्रख्रपप्रापप्रध्रपप्रस्पप्रख्रपप्रध्रप प्रज्ञपप्रस्पप्रभ्रपप्रद्रपप्रद्रपप्रस्पप्रस्प प्रभ्रपप्रतपप्रथपप्रस्पप्रध्रपप्रभ्रपप्रभ्रप प्रक्रपप्रस्वपप्रभपप्रमपप पप्रथ्रपप्रस्पप्रस्पप्र

पपक्रपपत्खपपनापपत्यपपत्छपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्छपपत्छप पत्रापपत्नपपश्चपपत्दपपत्थपपन्नपपत्मपप्रमप पत्रपपश्चपपत्मपप पपत्यपपत्नपपत्कपपत्मप वपपश्चपप पपत्मपपत्सपपत्हपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रयपप्रस्पप्रयपप्रथप प्रजपप्रश्नपप्रजपप्रटपप्रयप्रस्पप्रसप्रणप प्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनपप्रपप्रपप्रक्षप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रखपप्रप्रपवप प्रशपप पप्रभपप्रसपप्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रधपपप्रखपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप पप्रनपपप्रपपपप्रकपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रभपपपप्रभपप पपप्रयपपप्रसपपप्रहपप